CBSE Class 9 Social Science Important Questions History Chapter 1 फ्रांसीसी क्रांति

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न-

प्रश्न 1.
अठारहवीं सदी में फ्रांसीसी समाज कितने एस्टेट्स में बँटा हुआ था? नाम दीजिए।
उत्तर:
तीन एस्टेट्स में (1) प्रथम एस्टेट (पादरी वर्ग) (2) द्वितीय एस्टेट (कुलीन वर्ग) (3) तृतीय एस्टेट (व्यापारी, वकील, किसान, कारीगर, नौकर आदि)।

प्रश्न 2.
'प्राचीन राजतन्त्र' पद का प्रयोग फ्रांस में किस सन्दर्भ में किया जाता है?
उत्तर:
'प्राचीन राजतन्त्र' पद का प्रयोग फ्रांस में सामान्यतः सन् 1789 से पहले के फ्रांसीसी समाज एवं संस्थाओं के लिए होता है।

प्रश्न 3.
फ्रांस के प्रथम दो एस्टेट के सदस्यों को प्राप्त किसी एक विशेषाधिकार का वर्णन कीजिए।
उत्तर:
उन्हें राज्य को दिये जाने वाले करों से छूट प्राप्त थी।

प्रश्न 4.
टाइद (Tithe) क्या था?
उत्तर:
टाइद एक धार्मिक कर था जो चर्च द्वारा किसानों से वसूला जाता था।

प्रश्न 5.
टाइल से क्या आशय था?
उत्तर:
'टाइल' सीधे राज्य को अदा किया जाने वाला कर था।

प्रश्न 6.
फ्रांस की क्रांति को किन प्रमुख दार्शनिकों ने प्रभावित किया?
अथवा
अठारहवीं सदी के किन्हीं दो दार्शनिकों के नाम बताइये जिनके विचारों का प्रभाव फ्रांसीसी क्रांति पर पड़ा।
उत्तर:

- जॉन लॉक
- ज्यां जाक रूसो
- मॉण्टेस्क्यू।

प्रश्न 7.
सरकार के बारे में मॉन्तेस्क्यू का प्रमुख विचार क्या था?
उत्तर:
मॉन्तेस्क्यू ने सरकार के अन्दर विधायिका, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका के बीच सत्ता विभाजन की बात कही थी।

प्रश्न 8.
नेशनल असेम्बली के गठन के समय के दो प्रमुख नेताओं के नाम दीजिए।
उत्तर:

- मिराब्यो
- आबे सिए।

प्रश्न 9.
फ्रांस के राष्ट्रगान का नाम क्या है?
उत्तर:
फ्रांस के राष्ट्रगान का नाम 'मार्सिले' है।

प्रश्न 10.
1791 के संविधान से किन लोगों को राजनीतिक अधिकार प्राप्त हुए?
उत्तर:
1791 के संविधान से केवल अमीरों को ही राजनीतिक अधिकार प्राप्त हुए।

प्रश्न 11.
मार्सिले को किसने लिखा था?
उत्तर:
रॉजेट दि लाइल ने।

प्रश्न 12.
जैकोबिन क्लब के सदस्यों में मुख्य रूप से कौन थे?
उत्तर:
इनमें मुख्य रूप से छोटे दुकानदार तथा कारीगर-जैसे जूता बनाने वाले, पेस्ट्री बनाने वाले, घड़ीसाज, छपाई करने वाले तथा नौकर व दिहाड़ी मजदूर थे।

प्रश्न 13.
जैकोबिनों का नेता कौन था?
उत्तर:
मैक्समिलियन रोबेस्प्येर जैकोबिनों का नेता था।

प्रश्न 14.
जैकोबिनों को किस नाम से जाना जाता था?
उत्तर:
'सौं कुलॉत' के नाम से।

https://www.evidyarthi.in/

प्रश्न 15.
गणतन्त्र का अर्थ समझाइये।
उत्तर:
गणतन्त्र सरकार का वह रूप है जहाँ सरकार एवं उसके प्रमुख का चुनाव जनता करती है। यह वंशानुगत राजशाही नहीं होती है।

प्रश्न 16.
फ्रांस में सन् 1793 से 1794 के काल को क्या कहा जाता है?
उत्तर:
फ्रांस में सन 1793 से 1794 के काल को 'आतंक का युग' कहा जाता है।

प्रश्न 17.
फ्रांस की क्रांति के दो परिणाम लिखो।
उत्तर:

- सामन्तवाद का अन्त हुआ।
- स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व की भावनाओं का विकास हुआ।

प्रश्न 18.
फ्रांस में सेंसरशिप की समाप्ति कब हुई?
उत्तर:
सन् 1789 में।

प्रश्न 19.
टूटी हुई जंजीर से क्या तात्पर्य है?
उत्तर:
टूटी हुई जंजीर दासों की आजादी का प्रतीक है।

प्रश्न 20.
फ्रांस में राजदण्ड किसका प्रतीक है?
उत्तर:
शाही सत्ता का।

प्रश्न 21.
गिलोटिन से आप क्या समझते हैं?
उत्तर:
गिलोटिन दो खंभों के बीच लटकते आरे वाली एक मशीन थी जिस पर रखकर अपराधी का सिर धड़ से अलग कर दिया जाता था।

प्रश्न 22.
जैकोबिन सरकार के पतन के बाद फ्रांस में किस तरह की सरकार स्थापित हुई?
उत्तर:
जैकोबिन सरकार के पतन के बाद फ्रांस में पाँच सदस्यों वाली डिरेक्ट्री सरकार स्थापित हुई।

प्रश्न 23.
डिरेक्ट्री की राजनीतिक अस्थिरता से फ्रांस में क्या हुआ?
उत्तर:
डिरेक्टी की राजनीतिक अस्थिरता से फ्रांस में सैनिक तानाशाही के उदय का मार्ग प्रशस्त हआ।

प्रश्न 24.
1791 के संविधान से निराश होकर महिलाओं ने क्या मांगें रखीं?
उत्तर:
1791 के संविधान से निराश होकर महिलाओं ने मताधिकार, असेम्बली के लिए चुने जाने तथा राजनीतिक पदों की मांग रखी।

प्रश्न 25.
जैकोबिन शासन के क्रांतिकारी सामाजिक सुधारों में से एक सुधार बताइये।
उत्तर:
फ्रांसीसी उपनिवेशों में दास प्रथा का उन्मूलन जैकोबिन शासन के क्रांतिकारी सामाजिक सुधारों में से एक था।

प्रश्न 26.
फ्रांसीसी उपनिवेशों से अन्तिम रूप से दास प्रथा का उन्मूलन कब किया गया?
उत्तर:
फ्रांसीसी उपनिवेशों से अन्तिम रूप से दास प्रथा का उन्मूलन 1848 में किया गया।

प्रश्न 27.
फ्रांस में सेंसरशिप की समाप्ति का कानून कब अस्तित्व में आया?
उत्तर:
सन् 1789 में।

प्रश्न 28.
सेंसरशिप की समाप्ति के बाद किस अधिकार के प्रदान किए जाने से मुद्रण संस्कृति का विकास हुआ?
उत्तर:
सेंसरशिप की समाप्ति के बाद 'भाषण एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार' दिए जाने से मुद्रण संस्कृति का विकास हुआ।

लघूत्तरात्मक प्रश्न-

प्रश्न 1.
फ्रांसीसी क्रांति का आरंभ किस घटना से माना जाता है?
उत्तर:
5 मई, 1789 को तीसरे एस्टेट के प्रतिनिधियों की नये करों के प्रस्ताव पर पूरी सभा द्वारा मतदान करने की मांग जिसमें प्रत्येक सदस्य को एक मत देने का अधिकार होगा, को सम्राट लुई सोलहवें द्वारा ठुकरा देने की घटना से फ्रांसीसी क्रांति का आरंभ माना जाता है।

https://www.evidyarthi.in/

प्रश्न 2.
निम्नलिखित राजनीतिक प्रतीकों के मायने लिखिए-
(अ) टूटी जंजीर
(ब) अपनी पूंछ में मुँह लिए साँप
(स) छड़ों का बींदार गट्ठर।
उत्तर:
(अ) टूटी जंजीर-टूटी जंजीर दासों की आजादी का प्रतीक है।
(ब) अपनी पूँछ में मुँह लिए साँप-यह समानता का प्रतीक है। अंगूठी का कोई ओर-छोर नहीं होता है।
(स) छड़ों का बींदार गट्ठर-यह एकता का प्रतीक है। अकेली छड़ को आसानी से तोड़ा जा सकता है पर पूरे गट्ठर को नहीं।

प्रश्न 3.
फ्रांस में क्रान्ति की शुरुआत किन परिस्थितियों में हुई?
उत्तर:
फ्रांस में क्रान्ति की शुरुआत निम्न परिस्थितियों में हुई-

- समाज में सामाजिक असमानता व्याप्त थी।
- अन्यायपूर्ण कर लगे हुए थे जो केवल तृतीय एस्टेट के लोगों को चुकाने पड़ते थे।
- दार्शनिकों तथा विद्वानों के विचारों का प्रसार।
- मध्य वर्ग का उदय।
- अत्यधिक महँगाई।
- स्वेच्छाचारी और निरंकुश शासन।
- एस्टेट्स जेनराल की बैठक में तृतीय एस्टेट की इस माँग को ठुकरा दिया जाना कि प्रत्येक सदस्य को एक मत का अधिकार होगा।

प्रश्न 4.
तीसरे एस्टेट की अधिकांश महिलाओं की क्या स्थिति थी?
उत्तर:
तीसरे एस्टेट की अधिकांश महिलाएँ जीविका निर्वाह के लिए सिलाई-बुनाई, कपड़ों की धुलाई, फल फूल, सब्जियां बेचना अथवा सम्पन्न घरों में घरेलू कार्य किया करती थीं। अधिकांश महिलाओं के पास पढ़ाई-लिखाई तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण के मौके नहीं थे। बहुत सारी महिलाएं वेश्यावृत्ति भी करती थीं।

प्रश्न 5.
1789 की क्रांति से पूर्व फ्रांसीसी समाज किस प्रकार व्यवस्थित था? इसमें तीसरे एस्टेट की भूमिका का उल्लेख करिए।
अथवा
अठारहवीं सदी में फ्रांसीसी समाज किस प्रकार संगठित था? समाज के कुछ वर्गों को क्या विशेष सुविधाएँ प्राप्त थीं?
उत्तर:
1789 की क्रांति से पूर्व फ्रांसीसी समाज तीन एस्टेट्स में व्यवस्थित था। ये तीन एस्टेट्स निम्न प्रकार थे-

- प्रथम एस्टेट-इस वर्ग में चर्च के उच्च श्रेणी के पादरी थे। उन्हें कई विशेषाधिकार प्राप्त थे तथा कोई कर नहीं चुकाना पड़ता था। ये किसानों से टाइद नामक धार्मिक कर भी वसूल करते थे।
- द्वितीयं एस्टेट-इस वर्ग में उच्च सरकारी अधिकारी तथा बड़े-बड़े जमींदार होते थे। यह कुलीन वर्ग कहलाता था। इन्हें भी अनेक विशेषाधिकार प्राप्त थे। ये भी कोई कर नहीं चुकाते थे। यह वर्ग किसानों से सामन्ती कर वसूल करता था।
- तृतीय एस्टेट-इस वर्ग में किसान, कारीगर, व्यवसायी, छोटे कर्मचारी, वकील, डॉक्टर आदि थे। इन पर करों का समस्त बोझ था। इनसे अतिरिक्त बेगार भी ली जाती थी।

प्रश्न 6.
एस्टेट्स जेनराल (प्रतिनिधि सभा) क्या थी? लुई XVI ने तीसरी एस्टेट की किस मांग को स्वीकार नहीं किया?
उत्तर:
एस्टेट्स जेनराल (प्रतिनिधि सभा) एस्टेट्स जेनराल फ्रांस की एक राजनीतिक संस्था थी। इसमें तीनों एस्टेट अपने-अपने प्रतिनिधि भेजते थे। प्राचीन राजतंत्र के अन्तर्गत फ्रांसीसी सम्राट अपनी मर्जी से कोई कर नहीं लगा सकता था। इसके लिए उसे एस्टेट्स जेनराल की बैठक बुलाकर नये करों के लिए उसकी मंजूरी लेनी होती थी।

फ्रांसीसी सम्राट लुई XVI ने 5 मई, 1789 को नये करों के प्रस्ताव के अनुमोदन के लिए एस्टेट्स जेनराल की बैठक बुलाई थी। एस्टेट्स जेनराल के नियमों के अनुसार प्रत्येक वर्ग को एक मत देने का अधिकार था। किन्तु इस बार तीसरी एस्टेट के प्रतिनिधियों ने मांग रखी कि अबकी बार पूरी सभा द्वारा मतदान कराया जाना चाहिए, जिसमें प्रत्येक सदस्य को एक मत देने का अधिकार होगा। लुई सोलह ने तीसरी एस्टेट की इस मांग को स्वीकार नहीं किया।

प्रश्न 7.
फ्रांस की क्रांति के तीन महत्त्वपूर्ण विचार क्या हैं? 1791 के संविधान के अन्तर्गत उनकी किस प्रकार गारंटी दी गई?
उत्तर:
फ्रांस की क्रांति के तीन महत्त्वपूर्ण विचार निम्न हैं-

- जीवन का अधिकार
- अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का अधिकार
- कानूनी बराबरी का अधिकार

1791 के संविधान के अन्तर्गत इन्हें नैसर्गिक एवं अहरणीय अधिकार के रूप में स्थान दिया गया। इसका अर्थ था कि ये अधिकार प्रत्येक व्यक्ति को जन्मजात रूप से प्राप्त थे तथा इन अधिकारों को छीना नहीं जा सकता था। राज्य का यह कर्त्तव्य माना गया कि वह प्रत्येक नागरिक के नैसर्गिक अधिकारों की रक्षा करे।।

प्रश्न 8.
फ्रांस में राष्ट्रीय सभा द्वारा 1791 में बनाये गये संविधान की प्रमुख विशेषतायें बताइये।
उत्तर:
फ्रांस के 1791 के संविधान की प्रमुख विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं-

- इसने फ्रांस में संवैधानिक राजतन्त्र की नींव डाली तथा सम्राट की शक्तियों को सीमित कर दिया।
- इसने शासन की शक्तियों को विभिन्न संस्थाओं-विधायिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका में विभाजित एवं हस्तांतरित कर दिया।

https://www.evidyarthi.in/

- इसने कानून बनाने का अधिकार नेशनल असेम्बली को सौंप दिया।
- इसमें 25 वर्ष से अधिक उम्र वाले केवल ऐसे पुरुषों को ही मताधिकार दिया गया जो कम-से-कम तीन दिन की मजदूरी के बराबर कर चुकाते थे।
- इसमें जीवन के अधिकार, अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के अधिकार तथा कानून के समक्ष समानता के अधिकार को नैसर्गिक एवं अहरणीय अधिकार के रूप में स्थापित किया गया था।

प्रश्न 9.
फ्रांस की क्रान्ति में लॉक, रूसो तथा मॉन्तेस्क्यू के विचारों ने किस प्रकार योगदान दिया?
उत्तर:
फ्रांस की क्रान्ति में लॉक, रूसो तथा मॉन्तेस्क्यू के विचारों ने बहुत योगदान दिया।

- लॉक-लॉक ने राजा के दैवी और निरंकुश अधिकारों के सिद्धान्त का खंडन किया।
- रूसो-रूसो ने अपनी पुस्तक 'द सोशल कॉन्ट्रैक्ट' में प्रत्येक सदस्य द्वारा एक मत देने के लोकतांत्रिक सिद्धान्त को प्रस्तुत किया था।
- मॉन्तेस्क्यू-मॉन्तेस्क्यू ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'द स्पिरिट ऑफ द लॉज' में सरकार के अन्दर विधायिका, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका के बीच सत्ता विभाजन की बात कही।

फ्रांस की जनता उपर्युक्त दार्शनिकों के विचारों से बहुत प्रभावित हुई तथा इससे क्रांति को बल मिला।

प्रश्न 10.
फ्रांस की क्रांति में जैकोबिन की क्या भूमिका थी?
उत्तर:
फ्रांस की क्रांति में जैकोबिन की भूमिका निम्नलिखित थी-

- जैकोबिन लोगों के राजनीतिक क्लब थे। लोग इन क्लबों में सरकारी नीतियों और अपनी कार्य योजना पर बहस करते थे।
- मैक्समिलियन रोबेस्प्येर उनका नेता था। जैकोबिन के एक बड़े वर्ग ने गोदी कामगारों की तरह धारीदार लम्बी पतलून पहनने का निर्णय किया। ऐसा उन्होंने कुलीनों से खुद को अलग करने के लिए किया। यह उनका कुलीनों की सत्ता समाप्ति का ऐलान था।
- सन् 1792 में जैकोबिनों ने खाद्य पदार्थों की महँगाई एवं अभाव से नाराज होकर राजतंत्र को समाप्त करने के लिए हिंसक विद्रोह की योजना बनायी।
- 10 अगस्त, 1792 की सुबह उन्होंने ट्यूलेरिए के महल पर धावा बोल कर राजा को कई घण्टों तक बन्धक बनाये रखा।
- असेम्बली ने शाही परिवार को जेल में डाल देने का प्रस्ताव किया। नए चुनाव कराये गए। 21 वर्ष से अधिक उम्र वाले सभी पुरुषों को मताधिकार दिया गया तथा 21 सितम्बर, 1792 को इसने राजतंत्र को समाप्त कर दिया तथा फ्रांस को एक गणतंत्र घोषित किया। 21 जनवरी, 1793 को लुई XVI को फाँसी दे दी गई।
- रोबेस्प्येर के नेतृत्व में सन् 1793 से 1794 तक फ्रांस पर शासन किया जिसे 'आतंक का युग' कहा जाता है।

प्रश्न 11.
फ्रांस में आतंक का राज' पर एक टिप्पणी लिखो।
अथवा
रोबेस्येर कौन था? उसके शासन का 'आतंक का शासन' के नाम से क्यों जाना जाता है?
अथवा

फ्रांस के इतिहास में कौनसा काल'आतंक का राज' के नाम से जाना जाता है? इस काल की प्रमुख बातों को संक्षेप में लिखिए।
उत्तर:
रोबेस्प्येर-रोबेस्प्येर जैकोबिनों का प्रमुख नेता था। 1792 में बनी जैकोबिन सरकार का वह प्रमुख था।
आतंक का राज-फ्रांस के इतिहास में सन् 1793 से 1794 तक के रोबेस्प्येर के शासन काल को 'आतंक का युग' अथवा 'आतंक का राज' कहा जाता है। इसके निम्न कारण हैं-
(1) इस काल के दौरान रोबेस्प्येर ने कठोर नियंत्रण तथा दण्ड की सख्त नीति को अपनाया।

(2) अपने विरोधियों जैसे-कुलीन एवं पादरी, अन्य राजनीतिक दलों के सदस्य, उसकी कार्यशैली से असहमति रखने वाले पार्टी सदस्य, सभी को बंदी बनाकर उन पर मुकदमा चलाया गया तथा न्यायालय द्वारा दोषी ठहराये जाने पर उन्हें गिलोटिन पर चढ़ाकर उनका सिर कत्ल कर दिया गया।

(3) रोबेस्प्येर ने कानून बनाकर मजदूरी एवं कीमतों की अधिकतम सीमा तय कर दी। गोश्त तथा पावरोटी की राशनिंग कर दी गई। किसानों को अपना अनाज शहरों में ले जाकर तय कीमत पर बेचने के लिए बाध्य किया गया। सभी नागरिकों को 'समता रोटी' खाना अनिवार्य कर दिया गया। बोलचाल और संबोधन में भी बराबरी का आचार-व्यवहार लागू करने की कोशिश की गई।

(4) उसके काल में चर्चों को बन्द कर दिया गया तथा उनके भवनों को बैरक या दफ्तर बना दिया गया।

प्रश्न 12.
फ्रांस की क्रांतिकारी सरकार ने महिलाओं के लाभ के लिए क्या कानून पारित किये?
उत्तर:
फ्रांस की क्रांतिकारी सरकार ने महिलाओं के लाभ के लिए निम्न कानून पारित किये-

- सरकारी विद्यालयों की स्थापना के साथ ही सभी लड़कियों के लिए स्कूली शिक्षा को अनिवार्य बना दिया गया।
- अब उन्हें उनकी मर्जी के खिलाफ शादी के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता था।
- शादी को स्वैच्छिक अनुबंध माना गया और नागरिक कानूनों के तहत उनका पंजीकरण किया जाने लगा।
- तलाक को कानूनी रूप दिया गया और पुरुष-महिला दोनों को ही इसकी अर्जी देने का अधिकार दिया गया।
- अब महिलाएँ व्यावसायिक प्रशिक्षण ले सकती थीं, कलाकार बन सकती थीं तथा छोटे-मोटे व्यवसाय चला सकती थीं।

प्रश्न 13.
अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में फ्रांस की दासता के विषय में क्या स्थिति थी? किन्हीं तीन स्थितियों को स्पष्ट कीजिए।
अथवा
फ्रांसीसी उपनिवेशों में दास-प्रथा की क्या स्थिति थी तथा यह प्रथा अन्ततः कैसे और कब समाप्त हुई?
उत्तर:
अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में फ्रांस में दास-प्रथा की स्थिति निम्न प्रकार थी-

- अठारहवीं शताब्दी में फ्रांस में दास-प्रथा की ज्यादा निंदा नहीं हुई। दास-व्यापार पर निर्भर व्यापारियों के विरोध के भय से नेशनल असेंबली में कोई कानून पारित नहीं किया गया।

https://www.evidyarthi.in/

- लेकिन अंततः सन् 1794 के कन्वेंशन द्वारा फ्रांसीसी उपनिवेशों में सभी दासों की मुक्ति का कानून पारित कर दिया गया। यह जैकोबिन शासन का क्रांतिकारी सामाजिक सुधार था। किन्तु यह कानून एक छोटी-सी अवधि तक ही लागू रहा।
- दस वर्ष बाद ही 1804 में नेपोलियन ने दास-प्रथा पुनः शुरू कर दी। बागान-मालिकों को अपने आर्थिक हित साधने के लिए अफ्रीकी नीग्रो लोगों को गुलाम बनाने की स्वतंत्रता मिल गयी।
- अन्ततः फ्रांसीसी उपनिवेशों से दास-प्रथा का निर्णायक उन्मूलन 1848 में किया गया।

प्रश्न 14.
जीविका संकट क्या है? अठारहवीं शताब्दी में फ्रांस में इसके लिए उत्तरदायी दो
कारकों का उल्लेख करें।
उत्तर:
जीविका संकट-जीविका संकट ऐसी चरम स्थिति होती है जिसमें जीवित रहने के न्यूनतम साधन भी खतरे में पड़ने लगते हैं।
अठारहवीं शताब्दी में फ्रांस में जीविका संकट के लिए उत्तरदायी दो कारक-
(1) फ्रांस की जनसंख्या 1715 में लगभग 2.3 करोड़ थी जो 1789 में 2.8 करोड़ हो गई। इसी कारण खाद्यान्नों की मांग में तेजी से वृद्धि हुई । खाद्यान्नों का उत्पादन माँग के अनुसार नहीं बढ़ रहा था। इसलिए पावरोटी की कीमतें बहुत तेजी से बढ़ीं, जो कि बहुसंख्यकों का मुख्य आहार था। परन्तु मजदूरी बढ़ती हुई कीमतों के अनुसार नहीं बढ़ती थी। इस प्रकार अमीरों तथा गरीबों में अंतर बढ़ता गया।

(2) जब भी कभी सूखे या ओलों का प्रकोप होने से पैदावार गिर जाती थी, तब भी जीविका संकट पैदा हो जाता था।

प्रश्न 15.
नेशनल असेम्बली द्वारा किये गये प्रमुख सुधारों का वर्णन कीजिए।
उत्तर:
नेशनल असेम्बली द्वारा किये गये प्रमुख सुधार निम्न प्रकार हैं:

- नेशनल असेम्बली ने करों, कर्तव्यों और बन्धनों वाली सामन्ती व्यवस्था के उन्मूलन का आदेश पारित किया।
- पादरी वर्ग के लोगों को भी अपने विशेषाधिकार छोड़ने के लिए विवश किया गया।
- धार्मिक कर समाप्त कर दिया गया।
- चर्च के स्वामित्व वाली भूमि जब्त कर ली गई।
- जनता को समानता, स्वतन्त्रता तथा भ्रातृत्व के साथ मौलिक अधिकार दिये गये।
- सम्राट की शक्तियों को सीमित किया गया तथा इन शक्तियों को विधायिका, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका में विभाजित व हस्तांतरित कर फ्रांस में संवैधानिक राजतंत्र की नींव डाली।

प्रश्न 16.
जैकोबिन क्लब पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
उत्तर:

- जैकोबिन क्लब फ्रांस का एक प्रमुख राजनैतिक क्लब था।
- इसके सदस्य मुख्यतः समाज के कम समृद्ध वर्ग से संबंध रखते थे; जैसे-छोटे दुकानदार, कारीगर, जूते बनाने वाले, पेस्ट्री बनाने वाले, घड़ीसाज, छपाई करने वाले, नौकर तथा दैनिक मजदूर आदि।

- जैकोबिन क्लब का नेता मैक्समिलियन रोब्सपियर था।
- गोदी में काम करने वाले कामगारों की तरह धारीदार लंबी पतलून उनकी पोशाक का हिस्सा थी। उन्होंने ऐसा स्वयं को समाज के फैशनपरस्त कुलीन वर्ग से अलग रखने के लिए किया। कुलीन लोग घुटनों तक ब्रीचेस पहनते थे। जैकोबिन क्लब के सदस्यों का यह पहनावा ब्रीचेस पहनने वाले लोगों की सत्ता समाप्ति की घोषणा करने का उनका तरीका था। जैकोबिन क्लब के सदस्यों को 'सौं कुलाँत' के नाम से जाना जाने लगा जिसका शाब्दिक अर्थ था-'बिना घुटन्ने वाले'।
- सौं कुलाँत लोग एक लाल टोपी भी पहनते थे, जो आजादी की प्रतीक थी।

प्रश्न 17.
'ओलम्प दे गूज' के जीवन का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
उत्तर:
फ्रांस की क्रांति में महिलाओं ने भी भाग लिया था। ओलम्प दे गूज नामक महिला क्रांतिकालीन फ्रांस की राजनीतिक रूप से सक्रिय महिलाओं में सबसे महत्त्वपूर्ण थीं। इनका जन्म 1748 में हुआ था तथा मृत्यु 1793 में हुई थी। उन्होंने संविधान तथा 'पुरुष एवं नागरिक अधिकार घोषणापत्र' का विरोध किया था क्योंकि उसमें महिलाओं को मानव मूलभूत अधिकारों से वंचित रखा गया था। सन् 1793 में ओलम्प दे गूज ने महिला क्लबों को जबर्दस्ती बंद कर देने के लिए जैकोबिन सरकार की आलोचना की। इस पर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। उन पर नेशनल कन्वेंशन द्वारा देशद्रोह का मुकदमा चलाया गया। इसके तुरंत बाद उन्हें फाँसी पर लटका दिया गया।

प्रश्न 18.
डिरेक्ट्री शासित फ्रांस पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।
उत्तर:
डिरेक्ट्री शासन से आशय-1794 ई. में फ्रांस में जैकोबिन सरकार के पतन के बाद फ्रांस की सत्ता मध्यम वर्ग के सम्पन्न लोगों के हाथ में आ गई । फ्रांस के नये संविधान में दो चुनी हुई विधान परिषदों के गठन का प्रावधान था। इन परिषदों ने पांच सदस्यों वाली एक कार्यपालिका को नियुक्त किया जिसे 'डिरेक्ट्री' कहा गया।

इस व्यवस्था के अन्तर्गत एक व्यक्ति के हाथ में शक्तियों के केन्द्रीकरण पर रोक लगाई गई। लेकिन इन डिरेक्टरों का झगड़ा अक्सर विधान परिषदों से होता था और तब परिषद् उन्हें बर्खास्त करने की कोशिश करती। इस प्रकार एक राजनैतिक अस्थिरता का वातावरण बना जिसने नेपोलियन बोनापार्ट के सैनिक शासन का मार्ग प्रशस्त किया।

प्रश्न 19.
अठारहवीं शताब्दी में फ्रांस में महिलाओं की दशा का वर्णन कीजिये।
उत्तर:
अठारहवीं शताब्दी में फ्रांस में महिलाओं की दशा का वर्णन निम्न बिन्दुओं में किया जा सकता है-

- तीसरे एस्टेट की अधिकतर महिलाओं को जीविकोपार्जन के लिए काम करना पड़ता था।
- उनमें से अधिकतर को शिक्षा प्राप्त नहीं थी।
- एक मजदूर के रूप में महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा कम मजदूरी मिलती थी।
- उन्हें कम उम्र में ही अपने माता-पिता द्वारा शादी करने के लिए बाध्य किया जाता था।
- अपनी नौकरी के साथ-साथ उन्हें अपने परिवारों की भी देखभाल करनी पड़ती थी।

https://www.evidyarthi.in/

प्रश्न 20.
क्रांति में फ्रांसीसी महिलाओं की भूमिका का वर्णन कीजिए।
उत्तर:
क्रांति में फ्रांसीसी महिलाओं की भूमिका-फ्रांसीसी समाज में क्रांति लाने में महिलाएँ भी सक्रिय रूप से शामिल थीं। उन्होंने क्रांतिकारी सरकार पर उनके जीवन में सधार लाने के लिए आवश्यक डाला। इस हेतु उन्होंने स्वयं के राजनैतिक क्लब एवं अखबार शुरू किए तथा निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण मुद्दे उठाए-

- सभी वर्गों की महिलाओं को शिक्षा एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाए।
- उन्हें भी पुरुषों के समाज मजदूरी दी जाए।
- उन्हें भी पुरुषों के समान राजनैतिक अधिकार दिए जाएं।
- उन्होंने मताधिकार, निर्वाचित होने तथा राजनैतिक पद ग्रहण कर सकने की मांग की। फ्रांस के विभिन्न शहरों में महिलाओं के ऐसे लगभग साठ राजनैतिक क्लब अस्तित्व में आए।

प्रश्न 21.
क्रांतिकारी सरकार ने महिलाओं के जीवन में सुधार लाने हेतु कौन-कौनसे कानून लागू
किए?
उत्तर:
प्रारंभिक वर्षों में क्रांतिकारी सरकार ने महिलाओं के जीवन में सुधार लाने वाले निम्न प्रमुख कानून लागू किए-

- सरकारी विद्यालयों की स्थापना के साथ ही सभी लड़कियों के लिए स्कूली शिक्षा को अनिवार्य बना दिया गया।
- अब पिता उन्हें उनकी मर्जी के खिलाफ शादी के लिए बाध्य नहीं कर सकते थे। शादी को स्वैच्छिक अनुबंध माना गया और नागरिक कानूनों के तहत उनका पंजीकरण किया जाने लगा।
- तलाक को कानूनी रूप दिया गया और मर्द-औरत दोनों को ही इसकी अर्जी देने का अधिकार दिया गया।
- अब महिलाएँ व्यावसायिक प्रशिक्षण ले सकती थीं, कलाकार बन सकती थीं और छोटे-मोटे व्यवसाय चला सकती थीं।
- लेकिन मताधिकार और समान वेतन का अधिकार उन्हें नहीं मिला। इसके लिए उनका आंदोलन जारी रहा। अन्ततः 1946 में उन्हें मताधिकार प्राप्त हुआ।